Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 9, June-2019, ISSN 2230-7540

मृणाल पाण्डे के साहित्य में शैलीगत जीवन-दर्शन

Priyanka[1]* Dr. Nirupama Harsh Vardhan[2]

[1] Research Scholar, Ph.D. (Hindi)

[2] Research Director, Department of Humanities and Social Sciences, Faculty of Management and Humanities, Jayoti Vidyapeeth Women's University, Jaipur

सार – शैली शब्द का अर्थ है- ढंग; यह रचनाकार की अभिव्यक्ति का वह विशेष गुण है जो उसे अन्य से श्रेष्ठ दिखाता है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी जीवन-शैली होती है। किसी एक विषय को विभिन्न व्यक्ति अपनी अभिव्यक्ति से अलग-अलग प्रकार अभिव्यंजित करते हैं। यह अलगाव शैली है। नृत्य, संगीत, चित्र आदि कलाओं में भी शैली शब्द प्रचलित है।

----------X----------

डॉ. नगेन्द्र ने हिन्दी काकालंकार सूत्रवृत्ति ग्रन्थ की भूमिका में शैली शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृति के शील शब्द से मानी है। शील शब्द का अर्थ है- स्वभाव, लक्षण, झुकाव, आदत आदि।

शैली वैज्ञानिकों ने 'शैली' को परिभाषा में बांधने की कोशिश अलग-अलग प्रकार से की है। "अरस्तु वाणी वैशिष्ट्य को 'शैली' कहता है। शैली वर्णन का उपयुक्त ढंग होता है। "शैली ही व्यक्ति है।"

"शैली आत्मा का मुखाकृति शास्त्र है।" "किसी लेखक की शैली उसके मस्तिष्क की सच्ची प्रतिलिपि होती है।"

इस प्रकार कहा जा सकता है कि 'शैली भाषिक' अभिव्यक्ति के आधार पर परिभाषा में बांधी जा सकती है।

मृणाल पांडे जी के साहित्य में शैलीगत वर्णन बड़ा ही सजीव है। उन्होंने अपने साहित्य में लोकोक्ति, मुहावरों, तत्सम, तदभव शब्दों का बिम्बों में सर्वाधिक महत्त्व चाक्षुष बिंब का सुंदर सजीव वर्णन किया है। इनकी शैली की महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि वे सहृदय पाठक के हृदय को उद्दीप्त करने में पूर्णतः समर्थ है।

मृणाल जी का हृदय विविध भावों का पुंज है। साहित्य में उन्होंने अपनी कल्पना शक्ति और कलागत प्रतिभा के आधार पर भावोद्बोधक शैली की रचना की है। उन्होंने लोकोक्तियों का बड़ा ही सुंदर चित्रण किया है।

लोकोक्तियों का प्रयोगः

हम कह सकते हैं कि लोकोक्ति किसी एक व्यक्ति को रचना न होकर सम्पूर्ण मानव समुदाय की सम्पत्ति मानी जाती है। ये किसी सर्वमान्य चिरकालीन सत्य और यथार्थ अनुभव को अपने में समेटे रहती है। यह सूत्र रूप में किसी गंभीर ज्ञान का कथन करती है। किसी उलझन के समय बड़े काम आती है।

मृणाल पांडे जी के साहित्य में लोकोक्तियों का वर्णन बड़ा ही सजीव है। लोकोक्तियों का प्रयोग इस प्रकार है- मृणाल पांडे जी ने 'काजर क कोठरी में'-

'मियां की जूती, मियाँ के सर।'[1]

'पूत के पाँव पालने में दिख जाते हैं।'[2]

"माँ पर ज्यादा बाप पर थोड़ा।

बहुत नहीं तो थोड़ा-थोड़ा।"[3]

"जिस पत्तल में खाता है,

उसी में छेद करता है।"[4]

"ये बाल धूप में सफेद नहीं किए से. साहब।"[5]

"आम के आम गुठलियों के दाम।"[6]

स्टेशन मास्टर नन्दन ऐसे गायब हुए जैसे गधे के सिर से सींग।"[7]

www.ignited.in

मुहावरों का नैसर्गिक प्रभावः

मुहावरे ऐसे रूढ़ शब्दों को कहा जाता है, जिसका वस्तविक अर्थ शब्दार्थ से भिन्न होता है। वाक्य को आकर्षक व प्रभावशाली बनाने के लिए मुहावरों का प्रयोग किया जाता है। शैलीगत दृष्टि से मृणाल पांडे जी ने अपने साहित्य को लोकोन्मुख बनाने के लिए लोक में प्रचलित मुहावरों का प्रयोग किया है। उन्होंने अपने काव्य में मुहावरों का विस्तृत फलक में प्रयोग किया है। उनके एक-एक मुहावरे में लोक-चेतना लोक मानसिकता और लोक प्रवृत्तियों की झलक मिलती है।

"न लगना था बट्टा इस खानदान पर न लगा।"[8]

"आँखों की ओट होना।"[9]

"छोटे मुँह बड़ी बात।"[10]

"काला अक्षर भैंस बराबर।"[11]

"आटे दाल का भाव पता होना।"[12]

"एक तो चोरी तिस पर सीना जोरी।"[13]

"चोरियाँ करेंगे सीना ठोक कर।"[14]

"अब हर जगह डंका बज रहा है।"[15]

"वे मुँह में दही जमाए बैठे रहते हैं।"[16]

"मुँह न ताको खड़े-खड़े।"17

"तुम्हारी छाती पर सांप क्यों लोट रहे हैं।"[18]

"उस मुँह जली के हाथ पीले करूं तो गंगा नहा लूँ भैया।"[19]

भाव मंथन की प्रगाढ़ताः

मानव हृदय विविध भावों का पुंज है। परिस्थितियों के अनुरूप समय-समय पर वह भिन्न-भिन्न भावों के आवेश में बहकर अपनी मनःस्थितियों का चित्रण करता है। इसी प्रकार साहित्यकार भी अपनी रचनाओं में किसी-न-किसी भाव की स्फूति करता है।

मृणाल जी इसी प्रकार की लेखिका है जिन्होंने समाज के पुरुष पक्ष को चित्रित करने के लिए अपने भावों का इस्तेमाल किया। उनकी दृष्टि वस्तु की सुंदरता की अपेक्षा उसकी कुरूपता पर अधिक पड़ी। हालांकि उनके साहित्य में जीवन की कोमलता का नितांत अभाव नहीं है।

'रास्तों पर भटकते हुए' उपन्यास में बंटी और उसकी माँ पार्वती की मौत की गुत्थी सुलझाने की कोशिश करती दिखाई देती है। पूंजीपतियों तथा बुद्धिजीवियों की सुविधा भोग के शिकार हुई बंटी और उसकी मा पार्वती के प्रति उनके मन में सहानुभूति है।

"धीरे-धीरे उफान विला गया था। इच्छा थी। किसी को कभी पता भी नहीं चलेगा कि क्या कुछ अनकहा छूट गया है। किसी-किसी कहानी में। कितने ढेरों पात्र है, जो पन्नों पर अवतरित होने से पहले ही चुपचाप नेपथ्य से रवाना कर दिए हैं। कितनी सारी मूक कथा और उलाहने हैं। जो देशी भाषा में उल्था करते ही एक भौंडा परचम बन जाते हैं।

हास्य का समावेशः

हास्य के कारण व्यक्ति के व्यक्तित्व में अनेक उपयोग गुणों का विकास होता है। डॉ. चतुर्वेदी ने स्पष्ट रूप से घोषित किया कि यदि संसार के लोगों को यह बात अच्छी तरह मालूम हो जाए कि हास्य का हमारे स्वास्थ्य पर कितना प्रभाव पड़ता है तो फिर आधे से अधिक डॉक्टरों, वैद्यों और हकीमों आदि के लिए मक्खियाँ मारने के सिवा और कोई काम ही न रह जाए।

हास्य के आलम्बन में अस्वभाविकता असंगति एवं विदूरपता का ऐसा मधुर समन्वय होता है कि वह न तो इतना तीखा होता है कि उससे अनिष्ठ की आशंका हो जाए और न ही इतना कोमल होता है कि वह करुणोत्पादक हो। मृणाल पांडे जी के साहित्य में हास्य की प्रचुर सामग्री उपलब्ध है। 'जो राम रचि राखा' नाटक में साहब मन्नोसेट की चमचागिरी में तरह-तरह की उपमाएँ प्रस्तुत करता हुआ, उनकी तारीफों के पुल बाँधता दिखाई देता है-

"हजूर अब भला कुछ ऐसा है जो आप न कर सको हो? भैंस क्या आप तो हाथी भी नहीं मेरा मतलब शेरनी भी दुहै ले और भैंस? आहा क्या जानवर गढ़ा है भगवान ने! अहो कैसा सुंदर जानवर है। जैसे काले पर्वत की विराट चट्टान हो तभी तो कहा है अकल बड़ी या भैंस? यानी भैंस ही बड़ी है बेशक! और ये भी कहा है कि काला अक्षर भैंस बराकर यानि अक्षर की जो महिमा है सोई भैंस माता की।"[20]

'चार दिन की जवानी तेरी' नामक कहानी संग्रह में 'कर्कशा' कहानी के अंतर्गत भी हास्य की सृष्टि होती दिखाई पड़ती है।

www.ignited.in

"हाँ जी, भग्गो बहन के बड़े पोत को कौतुक से बता रही थी, तुम्हारे मौसा जी जो है बताओ तो भला कैसे दिखते हैं?"

'झल्लू' के बापू जैसे? भोला बच पट्टे से कहता- झल्लू का बाप उनके कर का जमादार था। भग्गो कई बार उससे यह बात दुहखाती- 'हाय कोई सुने इस मसखरे की बात।' जानती है, "फिर वह बहन से कहती 'पहली बार जब से आये थे हमारे घर, तब तुम ससुराल में थी, हाय राम, हाथ में टीन का बकुचा उठाये- गाल में पानी भरे मुझमें पूछे- "धड़े में कोई है? मैंने जाके अम्मा से कह दिया कि शायद नाई आया है हजामत को किसी की।[21]

'रास्तों पर भटकते हुए' उपन्यास में लेखिका अपने भाई की बुराइयों और त्रुटियों के निराकरण के लिए बचपन की यादों का सहारा लेती जिसमें हास्य के माध्यम से उसका मिजाज कुछ हद तक ठीक जाता।

मृणाल पांडे जी का हास्य वर्णन जीवन और समाज में आनन्द का संचार करने के साथ-साथ उसमें स्वस्थ, नैतिक एवं उपयोगी भावनाओं को विकसित करता है।

बिम्बात्मकताः

बिम्ब किसी भावना अथवा किसी ऐन्द्रिय भाव के द्वारा बनाया हुआ भावनाओं से युक्त ऐसा चित्र है, जिसके माध्यम से लेखक अपने अमूर्त भावों को व्यक्त करता है।

डॉ. नगेन्द्र के अनुसार बिम्ब एक प्रकार का चित्र है जो किसी पदार्थ के साथ-साथ विभिन्न इन्द्रियों के सन्निकर्ष से प्रमाता के चित्र में अद्भुत हो जाता है।[22]

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सर्वप्रथम "आधुनिक हिन्दी काव्य समीक्षा" के क्षेत्र में बिम्ब शब्द का उपयोग किया और इसकी व्याख्या भी की- काव्य का काम है कल्पना में, बिम्ब या मूर्त भावना को उपस्थित करना।"[23]

मृणाल पांडे जी ने एन्द्रिय बिम्बों में सर्वाधिक महत्त्व चाक्षुष बिम्बों को प्रदान किया है। इन बिम्बों की विशेषता है कि ये सहृदय पाठक के हृदय को उदीप्त करने में पूर्णतः समर्थ है। उस समय ये भाव सुने-सुनाए वर्णन नहीं लगते वरन् उनकी प्रतीति एक प्रत्यक्ष चित्र, प्रसंग घटना, व्यापार आदि की भाँति होती है। "मोटरसाइकिल सवार एक साधु आया और उसने चाय का आर्डर दिया फिर उसने अपने झोले से एक पॉकेट ट्रांजिस्टर निकाला उसकी बैटरी कमजोर पड़ गई लगती थी। उसने समाचार को अच्छे ढंग से सुनने के लिए ट्राजिस्टर को ठोका-पीटा। उसके चश्में पर जब सूरज की रोशनी पड़ी तो किरणों तेजी से चमकी। देश भर में बच्चे कॉलेजों के साथ खुद को भी जला रहे हैं, साधु ने चाय वाले से कहा, मैं ही दो जले स्कूटरों और एक जली बस को देखकर आ रहा हूँ। "चाय वाले ने मुँह बना लिया। क्या यह बच्चों की जाने-माने का दुख था? लेकिन फिर वह पीछे झुका, काउंटर बजाकर चाय की हांक लगाई ओर किसी भजन की पंक्तियाँ गुनगुनाने लगा। हो सकता है चेहरे की विकृति अनपच से उठी डकार के चलते हो।"[24] मृणाल जी ने अपने साहित्य में स्मृति को अत्यधिक महत्त्व दिया। उनके साहित्य में स्मृत्यामिश्रित बिम्बों की एक अटूट शृंखला सी बंधी हुई है।

भाषा एवं शब्द-विधानः

किसी भी भाषा का व्यवस्थित रूप उसके शब्द-भंडार एवं व्याकरण पर निर्भर होता है। शब्दों के अभाव में अथवा व्याकरण के अनिश्चित रूप की स्थिति में सशक्त भाषा की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जिस प्रकार प्राणों के अभाव में सुंदर देह का कोई महत्त्व नहीं, उसी प्रकार शब्दों की अनुपस्थिति में भाषा का अस्तित्व नहीं। मृणाल पांडे जी के साहित्य का भंडार अत्यंत समृद्ध है। इसका कारण विभिन्न प्रदेशों के साहित्य और शास्त्रादि का पठन-पाठन का माध्यम रहना है। जिसके कारण संस्कृत का विपुल शब्द समूह मृणाल जी को विरासत में माँ से मिला था, जिसे इन्होंने अपनी प्रकृति के अनुसार तत्सम और तद्भव दोनों रूपों में ग्रहण किया।

समय-समय के परिवर्तन के साथ जीवन मूल्यों में परिवर्तन आते रहने के परिणामस्वरूप उनके अनुरूप यह समय-समय पर अनेक नवीन शब्दों का भी निर्माण करती रही।

मृणाल जी ने तत्सम् तद्भव, देशज तथा विदेशी भाषाओं से विविध शब्द रूपी मोतियों का चयन करके अपनी साहित्य मंजुषा को सजाया-संवारा है। अतः यहाँ इन्हीं वर्गों के अन्तर्गत उनके शब्द भंडार का विवेचन करना अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है।

निष्कर्षः

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि शैली एक कड़ी है जो भाषा और साहित्य को जोड़ने वाली संकल्पना है। जिसके संदर्भ में कहा जा सकता है। शैली कलात्मक सौन्दर्य की अभिव्यक्ति की भाषित संरचना हैं। मृणाल पांडे जी ने अपनी शैली में मुहावरों, लोकोक्ति का बड़ा ही सुंदर वर्णन किया है, जिससे भाषा अधिक रुचिकर बन गई है। मृणाल जी के साहित्य में बिम्ब सौन्दर्य भी उत्कृष्ट कोटि का है। इसमें

www.ignited.in

उन्होंने अपनी कल्पना शक्ति और कलागत प्रतिभा के आधार पर भावोद्बोधक बिम्बों की रचना की है। देशज, विदेशज, तत्सम्, तद्भव शब्दों का भी बड़ा सुंदर प्रयोग किया गया है।

संदर्भ

1. मृणाल पांडे, काजर की कोठरी, पृ. 29
2. वही, जो राम रचि राखा, पृ. 27
3. वही, पृ. 27
4. वही, पृ. 54
5. वही, पृ. 49
6. वही, पृ. 39
7. वही, हमको दिया परदेश
8. वही, जो राम रचि राखा, पृ. 38
9. वही, काजर की कोठरी, पृ. 32
10. वही, जो राम रचि राखा, पृ. 27
11. वही, पृ. 31
12. वही, पृ. 32
13. वही, पृ. 32
14. वही, पृ. 34
15. वही, पृ. 36
16. वही, पृ. 17
17. वही, पृ. 47
18. वही, जो राम रचि राखा, पृ. 54
19. वही, पृ. 53
20. वही,
21. मृणाल पांडे, चार दिन की जवानी तेरी, पृ. 39
22. डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी ध्वन्यालोक, पृ. 45
23. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, चिंतामणी (भाग-2), पृ. 288
24. मृणाल पांडे, अपनी गवाही, पृ. 96

Corresponding Author

Priyanka*

Research Scholar, Ph.D. (Hindi)

www.ignited.in